

“यह वह है जो हमारी शासक वर्ग ने तय किया है कि सामान्य होगा”: हारून बुशनेल को याद करते हुए

25 फरवरी 2024 को, 25 वर्षीय अमेरिकी वायु सेना के सैनिक **हारून बुशनेल** ने शांति से वाशिंगटन, डी.सी. में इज़राइली दूतावास के द्वार की ओर कदम बढ़ाया। अपनी सैन्य वर्दी में, उन्होंने लाइवस्ट्रीम पर धीरे से कहा:

“मैं संयुक्त राज्य वायु सेना का सक्रिय सदस्य हूँ, और अब मैं नरसंहार में सहभागी नहीं रहूँगा। मैं एक अत्यधिक विरोध प्रदर्शन करने वाला हूँ, लेकिन फ़िलिस्तीन में लोगों ने अपने उपनिवेशकों के हाथों जो अनुभव किया है, उसके मुकाबले यह बिल्कुल भी अत्यधिक नहीं है। यह वह है जो हमारी शासक वर्ग ने तय किया है कि सामान्य होगा।”

कुछ पल बाद उन्होंने खुद को आग लगा ली। लपटें उन्हें घेरते ही वे बार-बार चिल्लाए: **“फ़्री फ़िलिस्तीन!”**

हारून बुशनेल कुछ घंटे बाद मर गए। उनका शरीर नष्ट हो गया, लेकिन उनके शब्दों ने अंतरात्मा, सहभागिता और नैतिक मौन की कीमत पर वैश्विक बातचीत को प्रज्वलित कर दिया।

अंतरात्मा का शहीद

हारून बुशनेल को शहीद कहना यह स्वीकार करना है कि वे उस सत्य के लिए मरे जिसे वे अब नकार नहीं सकते थे। उनका कार्य निराशा से नहीं, बल्कि दृढ़ विश्वास से उत्पन्न हुआ — उनके आसपास दिखने वाली नैतिक पाखंड में जीने की कट्टर अस्वीकृति।

बुशनेल ने सत्ता की मशीनरी को समझा। एक साधारण सैनिक के रूप में उन्होंने देखा था कि आज्ञाकारिता और नौकरशाही दूर के युद्धों को कैसे बनाए रखती है, सिविलियनों के दुख को कैसे आँकड़ों में बदला जाता है, और “राष्ट्रीय सुरक्षा” और “संपार्श्विक क्षति” जैसे शब्दों से कैसे क्रूरता को साफ-सुथरा बनाया जाता है।

लेकिन उनका विद्रोह केवल सार्वजनिक नहीं था; वह हृदयविदारक रूप से व्यक्तिगत भी था। मृत्यु से पहले उन्होंने **अपनी सारी बचत फ़िलिस्तीन चिल्ड्रन रिलीफ़ फंड को दान कर दी**, जो युद्ध के युवा पीड़ितों को चिकित्सा देखभाल और सहायता प्रदान करता है। उन्होंने **अपने पड़ोसी को अपनी प्यारी बिल्ली की देखभाल करने की व्यवस्था भी की**, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके अंतिम विरोध में भी हर निर्णय में करुणा मार्गदर्शक रही।

ऐसे इशारे दर्शाते हैं कि उनका विरोध जीवन का इनकार नहीं, बल्कि उसकी रक्षा था।

मृत्यु से पहले के दिनों में उन्होंने ऑनलाइन पोस्ट किया:

“हम में से बहुत से लोग खुद से पूछना पसंद करते हैं, ‘अगर मैं गुलामी के समय जीवित होता? या जिम क्रो दक्षिण में? या रंगभेद में? मैं क्या करता अगर मेरा देश नरसंहार कर रहा होता?’ जवाब है, तुम कर रहे हो। अभी।”

यह घोषणा एक साथ स्वीकारोक्ति और चुनौती थी — एक समाज के सामने दर्पण, जो नैतिक पूर्वदृष्टि पर गर्व करता है जबकि समकालीन अत्याचारों को सहन करता है।

अकल्पनीय का सामान्यीकरण

बुशनेल की ठंडी चेतावनी — “यह वह है जो हमारी शासक वर्ग ने तय किया है कि सामान्य होगा” — अतिशयोक्ति नहीं थी। यह निदान था। उन्होंने एक ऐसी दुनिया देखी जहाँ गाज़ा में पूरे मोहल्लों का विनाश, सिविलियनों को भूखा मारना और बच्चों की हत्या नीति और रक्षा की भाषा में उचित ठहराई जा सकती है।

उनके लिए भयावहता केवल हिंसा में नहीं, बल्कि उस हिंसा को कितनी आसानी से खारिज किया जाता है में थी। जब सरकारें मानवाधिकारों का उल्लंघन बिना सजा के करती हैं और जनता इसे भू-राजनीति का पृष्ठभूमि शोर मान लेती है, तो अत्याचार वाकई सामान्य हो जाता है।

बुशनेल का कार्य इस नई सामान्यता को स्वीकार करने से इनकार था। उनकी आग ने घोषणा की: “नहीं, यह सामान्य नहीं हो सकता।”

अंतरराष्ट्रीय कानून की टूटी सत्ता

बुशनेल के विरोध के केंद्र में केवल गाज़ा के प्रति सहानुभूति नहीं, बल्कि मानवता के भविष्य का डर था। एक बार जब **अंतरराष्ट्रीय कानून के मानदंड** — सामूहिक दंड, सिविलियनों पर हमला या भूख को युद्ध का हथियार बनाने के खिलाफ — बिना परिणाम के तोड़े जाते हैं, तो मिसाल वैश्विक पतन को आमंत्रित करती है।

वे समझते थे कि एक संघर्ष में जवाबदेही का क्षरण बाद में हर राष्ट्र threatens करता है। जब कानून चुनिंदा हो जाता है, जब न्याय सशर्त होता है, तो नैतिकता ही बातचीत योग्य बन जाती है। उनकी मृत्यु इस प्रकार **एक नैतिक चीख और भविष्यवाणीपूर्ण चेतावनी** थी: दुनिया टिक नहीं सकती अगर सत्ता बिना शर्म के मार सकती है।

अंतरात्मा की गूँज: नैतिक चेतावनी की वंशावली

बुशनेल के शब्द उन विचारकों की स्थायी परंपरा से संबंधित हैं जिन्होंने जोर दिया कि **बुराई नफरत पर नहीं, उदासीनता पर फलती-फूलती है**। उनकी चिंतन समय के पार गूँजती हैं — आइंस्टीन के मानवतावाद, बर्क के राजनीतिक यथार्थवाद और एली वीज़ेल के नैतिक साक्ष्य के साथ — प्रत्येक ने अपनी युग में सहभागिता के प्रश्न का सामना किया।

जब बुशनेल ने लिखा:

“हम में से बहुत से लोग खुद से पूछना पसंद करते हैं, ‘अगर मैं गुलामी के समय जीवित होता? या जिम क्रो दक्षिण में? या रंगभेद में? मैं क्या करता अगर मेरा देश नरसंहार कर रहा होता?’ जवाब है, तुम कर रहे हो। अभी।”

तो वे इस वंशावली में शामिल हो गए — इतिहास की नैतिक पूर्वदृष्टि को वर्तमान काल की अभियोग में बदलते हुए।

आइंस्टीन: देखने की कीमत

अल्बर्ट आइंस्टीन को अक्सर दी जाने वाली, हालांकि असत्यापित, उद्धरण बुशनेल के अर्थ को पकड़ती है:

“दुनिया को बुराई करने वालों से नहीं, बल्कि उन्हें देखने वालों से नष्ट किया जाएगा जो कुछ नहीं करते।”

दोनों ने पहचाना कि बुराई शायद ही घोषणा करती है; वह त्याग और आज्ञाकारिता के माध्यम से रोजमर्रा की जिंदगी में रिसती है। बुशनेल ने दर्शक बनने से इनकार किया। उनका कार्य निष्क्रियता की अंतिम नकार था — घोषणा कि मौन स्वयं शक्तिशालियों के हाथों हथियार है।

बर्क: “अच्छे लोगों” की घातक निष्क्रियता

एडमंड बर्क की प्रसिद्ध चेतावनी अभी भी गूँजती है:

“बुराई के विजय के लिए आवश्यक एकमात्र चीज है कि अच्छे लोग कुछ न करें।”

बुशनेल का संदेश इस विचार को नई तात्कालिकता देता है। उनके समय के “अच्छे लोग” खलनायक नहीं थे, बल्कि नागरिक, पेशेवर और सैनिक थे जो चुपचाप विनाश के सिस्टम को बनाए रखते थे। “तुम कर रहे हो। अभी,” कहकर बुशनेल ने सहभागिता के तटस्थ होने की सात्वना देने वाली भ्रांति तोड़ दी। यह नहीं है। यह निष्क्रियता के माध्यम से नुकसान में सक्रिय भागीदारी है।

वीज़ेल: सहानुभूति की मृत्यु

और एली वीज़ेल के 1986 नोबेल व्याख्यान के भयावह शब्दों में:

“प्रेम का विपरीत नफरत नहीं, उदासीनता है।”

वीज़ेल के लिए उदासीनता ने ऑशविट्ज़ को संभव बनाया; बुशनेल के लिए उदासीनता गाज़ा को जलने देती है। दोनों ने देखा कि सबसे बड़ा खतरा क्रोध नहीं, बल्कि नैतिक सुन्नता है जो अत्याचारों को स्क्रीन के माध्यम से दुनिया के देखते रहने देती है।

बुशनेल की आवाज़ उनकी में शामिल हो जाती है — सिद्धांत में नहीं, बल्कि लपटों में।

आग के माध्यम से साक्ष्य

इतिहास भर स्व-आत्मदाह साक्ष्य का सबसे चरम रूप रहा है — साइगॉन में थिच क्वांग डुक के मौन विरोध से लेकर स्वतंत्रता के लिए खुद को आग लगाने वाले तिब्बती भिक्षुओं तक। हर कार्य नैतिक चीख को पीड़ा की सार्वभौमिक भाषा में अनुवाद करता है।

हारून बुशनेल इस कट्टर साक्ष्य की वंशावली में शामिल हो गए। उनकी लपटें केवल आक्रोश का प्रतीक नहीं थीं, बल्कि शक्तिशालियों की सुन्न अंतरात्मा को जगाने का प्रयास थीं। उन्होंने दूसरों को नष्ट करने की कोशिश नहीं की — केवल हमें याद दिलाने के लिए कि जीवन स्वयं हमारे नाम पर नष्ट किया जा रहा है।

उन्होंने बदला नहीं, मुक्ति की बात की — निराशा नहीं, एकजुटता की।

वह बोझ जो वे छोड़ गए

हारून बुशनेल को याद करना भारी जिम्मेदारी उठाना है। उनका जीवन मांग करता है कि हम उन सिस्टमों में अपनी सहभागिता का सामना करें जिनमें हम रहते हैं। हम में से कितने, वे कब्र के पार से पूछते हैं, “सामान्य” के रूप में स्वीकार करना जारी रखते हैं जो हमें भयभीत करना चाहिए?

उन्होंने कोई घोषणापत्र नहीं छोड़ा, कोई संगठन नहीं — केवल एक इंसान का उदाहरण जिसने अत्याचार को सामान्य बनाने से इनकार किया। उन्होंने अपनी बिल्ली को सुरक्षित रखा, अपनी बचत युद्ध क्षेत्र में फंसे बच्चों को दी, और इतिहास में जीवित प्रश्नचिह्न के रूप में प्रवेश किया: **तुम क्या करते?**

उनकी चेतावनी, “यह वह है जो हमारी शासक वर्ग ने तय किया है कि सामान्य होगा,” केवल अभिजात वर्ग की निंदा नहीं है। यह हम सभी के लिए दर्पण है। क्योंकि ऊपर से सामान्यीकृत वह नीचे से स्वीकार किए जाने के कारण ही जीवित रहता है।

उपसंहार: एक लौ जो बुझने से इनकार करती है

हारून बुशनेल का अंतिम कार्य अंत नहीं था, बल्कि खुला द्वार — सामूहिक इनकार के कपड़े में फटावा। उनकी मृत्यु हमें याद दिलाती है कि अंतरात्मा अभी भी मौजूद है, भले ही साम्राज्य की मशीनरी के नीचे दबी हो।

वे एक सैनिक थे जिन्होंने आज्ञाकारिता पर मानवता चुनी। वे एक व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी बिल्ली को सुरक्षित रखा जबकि खुद आग में चले गए। वे एक नागरिक थे जिन्होंने स्वीकार करने से इनकार किया कि नरसंहार कभी “सामान्य” हो सकता है।

■ “यह वह है जो हमारी शासक वर्ग ने तय किया है कि सामान्य होगा।”

इन शब्दों को हर सरकारी हॉल, हर न्यूज़रूम और हर शांत घर में गूँजने दो। वे केवल उनकी चेतावनी नहीं — वे हमारा फैसला हैं।

हारून बुशनेल को याद करना उनका विरोध व्यर्थ था ऐसा जीने से इनकार करना है। उनकी आग हमें जागने, कार्य करने और अमानवीयता के सामान्यीकरण को समाप्त करने के लिए बुलाती है इससे पहले कि वह हमें सबको निगल ले।